e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 12, December 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.569

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com www.ijirset.com

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

व्यंग्यकार गिरीश पंकज की व्यंग्य दृष्टि

***जे.जाक्कुलिन तंगम, **डॉ. वी जगन्नाथ रेड्डी**

* शोधार्थी , हिंदी विभाग, अण्णामलै विश्वविद्यालय, तमिल नाडु, इंडिया

** शोध निदेशक , हिंदी विभाग, अण्णामलै विश्वविद्यालय, तमिल नाडु, इंडिया

सार

गिरीश पंकज के व्यंग्य समाज को सच्चाई का आईना दिखाने का कार्य एक सफाई कर्मी की तरह तो किया है, साथ ही एक डाॅक्टर की तरह उसका समाधान भी प्रस्तुत किया है। गिरीश पकंज के व्यंग्य साहित्य में समाज के आस-पास के अनुभुत विषय ही दृष्टि गोचर होते है। जिससे पाठक के मन में एक प्रश्न उठता है कि इस पाठ्य वस्तु में जो पात्र है, वह हमीं तो नहीं? इस प्रकार गिरीष पंकज के व्यंग्य हमे जीवतंता का एहसास भी कराते हैं और अपने आप को सुधार करने पर मजबूर भी करते है। इस प्रकार गिरीष पंकज ने अपने व्यंग्य व व्यंग्य साहित्य को एक दिशा प्रदान की है। गिरीश पंकज हिन्दी के एक व्यंग्यकार हैं। इनके दस व्यंग्य संग्रह, पाँच उपन्यास समेत विभिन्न विधाओं में चालीस पुस्तकें प्रकाशित हैं। इन्हें व्यंग्य लेखन के लिए "अट्टहास सम्मान", "श्री लाल शुक्ल व्यंग्य सम्मान", "लीलारनी सम्मान" समेत अनेक सम्मान, पुरस्कार प्राप्त हुये हैं। अनामी शरण बबल युवा भी हैं और वरिष्ठ पत्रकार भी। अनेक महत्वपूर्ण अखबारों में वे काम कर चुके हैं। अपनी महत्वपूर्ण पत्रिका का प्रकाशन भी कर रहे हैं। फेसबुक के माध्यम से वे मुझसे और अधिक गहरे तक जुड़ गए हैं। उनके मन में मेरी रचनात्मकता के प्रति काफी आदरभाव है। अपनी पत्रिका का एक अंक मुझे पर केंद्रत भी करने की योजना उनकी रही है। उनका मानना है कि साहित्य में इतनी सक्रियता के बाद भी मुझे वह स्थान शायद नहीं मिल सका, जो मिलना चाहिए थे। उनका कहना है कि महानगर के लेखकों ने कस्बों के लेखकों के साथ अन्याय किया है।

परिचय

व्यंग्य से तात्पर्य उस अनुभव या भाव से हो जो मन को प्रसन्नचित करता है। किसी प्रकार की कोई घटना, काण्य प्रसंग गघ की विधाओं का रूप जैसे (कहानी, नाटक, एकांकी) जिसमें हास्य रस का पुट हो व्यंग्य कहलाता है। ऐसी रचनाएं व्यंग्य कहलती है। इसके अंतर्गत चुटकुलो को सर्वसम्मति से स्थान दिया गया है।

व्यंग्य की उत्पत्ति 'अज्ज' धातु में 'वि उपसर्ग व 'ण्यत' प्रत्यय लगाने से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ताना कसना। दूसरे शब्दों में, 'व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति अथवा रचना है जिसके द्वारा व्यक्ति अथवा समाज की विसंगतियों और विडबानाओं अथवा उसके किसी पहलू को रोचक तथा हास्यास्पद ढंग से प्रस्तुत किया जाता हैं।

वर्तमान समाज में व्याप्त अव्यस्थाओं को देखकर कभी-कभी मन व्यथित हो जाता है, चाहे वह अव्यवस्था सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक या धार्मिक हो मन इन अव्यवस्थाओं का प्रतिकार करना चाहता है परन्तु किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से हम इनका प्रतिकार नहीं कर पाते और ये भावनाएँ मन के किन्ही कोने में संचित होने लगती है। व्यंग्यकार इन्ही संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास करता है।[1]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

गिरीश पंकज -जन्म : १ जनवरी, १९५७

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी), बी. जे.(प्रावीण्य सूची में प्रथम), डिप्लोमा इन फोक आर्ट।

प्रकाशन : सात व्यंग्य संग्रह- ट्यूशन शरणम गच्छामि, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, ईमानदारों की तलाश, मंत्री को जुकाम, मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ, नेता जी बाथरूम में और हिट होने के फार्मूले।

तीन व्यंग्य उपन्यासः मिठलबरा की आत्मकथा, माफिया (दोनों पुरस्कृत), एवं पॉलीवुड की अप्सरा। नवसाक्षरों के लिए बारह पुस्तकें, बच्चों के लिए चार पुस्तकें। एक ग़ज़ल संग्रह, एक हास्य चालीसा। चार व्यंग्य संग्रहों में रचनाएँ संकलित।

अनुवाद: कुछ रचनाओं का तमिल, उर्दू, कन्नड, अंग्रेज़ी, नेपाली, सिंधी, मराठी, पंजाबी, छत्तीसगढ़ी आदि में अनुवाद।

सम्मान-पुरस्कार : व्यंग्य का बहुचर्चित अट्टहास युवा सम्मान। माफिया के लिए लीलारानी स्मृति सम्मान, एवं मिठलबरा की आत्मकथा के लिए रत्नभारती सम्मान। तीस से ज़्यादा संस्थाओं द्वारा सम्मान-पुरस्कार।[2]

विदेश प्रवास: अमरीका, ब्रिटेन, त्रिनिडाड(वेस्टइंडीज) थाईलैंड, मारीशस, श्रीलंका, नेपाल, बहरीन, मस्कट, दुबई। अमरीका के लोकप्रिय रेडियो चैनल सलाम नमस्ते से सीधा काव्य प्रसारण। कार्यानुभव: तीस साल से पत्रकारिता एवं साहित्य में सक्रिय। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित अनुवाद पत्रिका सद्भावना दर्पण का तेरह वर्षों से प्रकाशन-संपादन। रेडियो, टीवी, के लिए अनेक प्रहसन एवं वार्ताएँ। दो का राष्ट्रीय प्रसारण।

सम्प्रति : संपादक-प्रकाशक सद्भावना दर्पण, संपादक बालहित (मासिक)। सदस्य साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं सदस्य हिंदी परामर्श मंडल। प्रांतीय अध्यक्ष-छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मंत्री प्रदेश सर्वोदय मंडल। कार्यकारिणी सदस्य-छत्तीसगढ़ बाल कल्याण परिषद समेत अनेक संस्थाओं से संबद्ध। व्यंग्य रचनाओं पर पाँच छात्रों द्वारा लघु शोधकार्य। गिरीश पंकज के समग्र व्यंग्य साहित्य पर कर्नाटक के शिक्षक श्री नागराज द्वारा पी-एच. डी उपाधि के लिए शोधकार्य। मलेरकोटला संगरूर (पंजाब) की शिक्षिका सुश्री दीपिका द्वारा उपन्यास गिरीश पंकज के उपन्यास पॉलीवुड की अप्सरा में व्यंग्य विषय पर एम. फिल उपाधि के लिए लघु शोध कार्य जारी। डॉ. सुधीर शर्मा द्वारा संपादित सहित्यिक पत्रिका साहित्य वैभव, रायपुर द्वारा पचास के गिरीश नामक बृहद विशेषांक प्रकाशित। पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर व्यंग्य एवं सामयिक मुद्दों पर लेखन।[3]

अवलोकन

गिरीश पंकज के अनुसार:-

नोटबंदी में फँस गए सांताक्लॉज

नोटबंदी के कारण 'टेंशनाए' लोगों ने जब सांताक्लॉज को देखा तो लपक पड़े उसकी ओर.

सब यही सोच रहे थे कि उपहारों की गठरी में नोट-ही-नोट होंगे। नोटबंदी के मारे लोग रात को भी नोट -नोट सपना रहे थे. भीड़ ने सांताक्लॉज को घेर लिया। लोग "मुझे...मुझे" करने लगे. धक्का -मुक्की, मारपीट की नौबत आ गयी। सांताक्लॉज के कपड़े फट गए. वे घबरा गए। भाग भी नही सकते थे. पिछले उच्च दिनों से बैंको और एटीएमों के बाहर लंबी-लंबी लाइने देख कर सांताक्लॉज को पहले लगा, मेरी ही तरह सांताक्लॉज होगा कोई, जो उपहार बाँटने आया है। लेकिन बाद में पता चला सब अपने पुराने नोट बदलवाने के लिए लाइन में लगे हैं या फिर नए नोट पाने के लिए। सांताक्लॉज ने कहा "भाइयो और बहनो, मेरे पास नोटबंदी का कोई समाधान नही है। मेरी गठरी में जो है, वही दे सकूंगा।" एक ने कहा, "ठीक है, जो है दे दो." उसके बाद तो फरमाइशों की लाइन लग गई. किसी को मंहगी कार की मांग की तो किसी को आलीशान बंगला चाहिए था. किसी को विदेश यात्रा, किसी को फ़ार्म हाउस तो किसी को सबसे मंहगा मोबाइल-लैपटाप चाहिए था। सांताक्लाज मुस्काए-"भाई, तुम लोग बेहद असंतुष्ट हो, परेशान जीव हो चुके हो। लो, तुम्हारे लिए इस बार कुछ अच्छे चीज़े लाया हूँ। इसे ले जाओ और जीवन भर सुख से रहो।" किसी ने कहा, "मतलब अच्छा-खास बैंक बैलेंस लाए है क्या?" दूसरा भी सेवानिवृत्त अफसर था. मुफ्तखोरी की खानदानी आदत लगी थी। वह चिल्लाया - "सैंटा, नए साल का जश्न मनाने विदेश जाने का मूड है.हवाई टिकट दे दो। अब कोई साला घास ही नहीं डालता।" एक नेता ने कहा, "सरकार की नोटबन्दी के कारण घर में दबा कर रखे गए हजार-पांच सौ के नोट बेकार हो रहे हैं. इनको दो हजार के गुलाबी नोटों में बदल दो।" सांताक्लॉज हंस पड़े - "वे बोले, "मैं जादूगर नहीं हूँ भाई,सांताक्लॉज हूँ.अडानी-अम्बानी टाइप का अरब-खरबपति सेठ भी नहीं हूँ, जिसके घर जाकर बैंकवाले नए नोट थमा कर आ जाते हैं.. नोटबंदी के कारण मैं भी कुछ ठीक से खरीद नहीं पाया. मेरे खाते में बहुत धन भी नहीं था कि 'कैशलेस' खरीदी करता। मैं तो कुछ और उपहार ले कर चलता हूँ सस्ता-सुंदर और टिकाऊ.चहिये तो बोलो वरना मैं तो चला." उपहार सुन कर माळेमुफ्त के रोग से ग्रस्त कुछ लोग चीख पड़े , "तो जल्दी निकालो, न नए साल का गिफ्ट। फोकट का चंदन

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

भी होगा तो हम घिस लेंगे। सांताक्लॉज बोले - "न मेरे पास चंदन है, न काजल है। मेरे पास जो है वो दे रहा हूँ. ये लो 'परमसंतोष', ... पकड़ो 'शांति', ये लो 'सद्भावना', ये रहा जीवन का परम 'आनंद।" सांताक्लाज ने गठरी खोल दी। सांताक्लॉज के उपहारों से कुछ लोग भयंकर निराश हुए, मगर कुछ समझदार लोग प्रसन्न हो कर अपनी राह चल पड़े। 'थैंक्स गॉड' कहते हुए सांताक्लॉज भी लौट गए लेकिन वे सोचते हुए जा रहे थे कि अब दुबारा इस तरफ आना खतरे से खाली नही है. जान बची और लाखो पाए, लौट के सैंटा घर को आए. [4]

व्यंग्य /महंगाई के कमरतोड़ आसन

इस देश में अगर योग के लिए प्रेरणा देने का काम किसी ने किया है तो वो है परमप्रिय महंगाई-सुंदरी.

इसे डायन कहना ठीक नहीं. डायन बर्बाद करती है, ये सुंदरी आबाद करती है. जनता और महंगाई-बाला दोनों अपने-अपने तरीके से योगासन कर रहे हैं. महंगाई के कारण लोग 'शीर्षासन' करने पर मजबूर है.

योग की सारी मुद्राएं करती है महंगाई. 'अनुलोम-विलोम' उसे बड़ा प्रिय है. साँस खींचती है यानी कीमत बढ़ाती है,और कभी-कभार साँस छोड़ती भी है. यानी कीमतें कम भी करती है लेकिन ऐसी नौबत कम ही आती है. वह अपना पेट गोल-गोल घुमाती रहती है. इसीलिये तो उसकी सेहत बनी हुई है. आम आदमी की सेहत गिर रही है. आम आदमी दाल की बढ़ती कीमत देख कर 'दुःखासन' करने लगता है.[5]

तभी टमाटर लाल हो जाता है और

पेट्रोल मुंह चिढ़ाने लगता है,

तो आम आदमी "शवासन" करने की मुद्रा में आ जाता है.

आम आदमी महंगाई के विरुद्ध पहले बहुत 'चिल्लासन' करता रहता था, पर जब से वो समझ गया है सरकार 'बहरासन' (यानी बहरी) में माहिर हो चुकी है, तब से वह भी "मौनआसन" करने लगा है.'ऐसी मीठी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप."

उस दिन महंगाईबाई मिल गई .

उसने कहा- "आ लग जा गले." मैंने कहा -"हम दूर से ही भले".

वह बोली- "इतनी जल्दी घबरा गया पगले? अभी तो ये अंगड़ाई है, आगे और महंगाई है?"

मैंने कहा- "तेरे कारण हम परेशान है "

वह बोली- "क्या करे, सरकार हम पर मेहरबान है' उसके कारण मेरा जलवा बना रहता है. तेरी थाली भले हो खाली पर मेरी थाली में तर हलवा बना रहता है.. दरअसल मैं तुम लोगो को हिम्मत देती हूँ. 'कम खाओ, गम खाओ' का सूत्र मैंने दिया है. कम खा कर सेहत बनाओ और योग करके फिट रहो. यह मैं ही तो सिखा रही हूँ."

मैंने कहा-" क्या हम लोग जीवन भर 'भूखासन' ही करते रहे?"

महंगाई बोली - "बिलकुल 'भूखासन' करोगे तो 'सुखासन' मिलेगा.मैं इस देश के लोगों को सबक सीखने के लिए अपना "योग" दिखा रही हूँ . खा-खा कर लोग मुटा रहे हैं. आरामतलब हो गए हैं. मगर जब से मैंने अपना 'भ्रामरी' शुरू किया है, तब से लोग भी भुन-भुनाने लगे हैं. और मजबूरी में ही सही, एक टाइम खाना खा रहे हैं और देखो, कैसे फिट नज़र आ रहे हैं. इस तरह इस देश को मैंने योगासनो के लिए प्रेरित किया है. मैं न होती तो लोग मुटाते जाते। पड़े रहते. मेरे कारण कम खाते हैं और अधिक -से-अधिक पैसे कमाने की कोशिश करते हैं. भले ही नंबर दो की कमाई हो....

...'घोटालासन' कितना पॉपुलर हो गया है. किसके कारण? मेरे कारण।

....लोग पैसे वाले बन रहे हैं, किसके कारण? मेरे कारण. [6]

....इस देश को पूंजीवादी कौन बना रहा है? मैं यानी महंगाई ,

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

....समझे मेरे भाई? चलो, अब कुछ मत बोलो. बोलने का कोई मतलब भी नहीं निकलता इसलिए एक अच्छा आसान बता रही हूँ, उसे करो और सुखी रहो.'

मैंने कहा- "बता दो देवी, उसे भी कर लेते हैं."

वह हंसी और बोली- "इस देश में सुखी रहना है तो एक ही सर्वोत्तम योगासन है. उसे करते चलो. वैसे सालों से कर ही रहे हो. वह है "चुप्पासन". और 'कुढ़ासन' और 'दुःखासन'. चुप रहो और कुढ़ते रहो."

महंगाई के भयंकर कमरतोड़ आसनो को सीख कर हम लौट आए.

कैसे-कैसे इतिहास पुरुष ...

ऐसे लोगों से हमको बहुत ही डर लगता है जो 'इतिहास - पुरुष' किस्म के होते हैं। यानी इतिहास के जानकार। कुछ सच्चे जानकार होते है तो कुछ बड़े झुठल्ले। जिन्होंने इतिहास के साथ साथ 'फेंकोलाज़ी' में भी डिग्री हासिल कर ली हो। यानी बस फेंके जाओ, सच हो चाहे झूठ। मनगढ़ंत बातों को इतिहास बता कर निकल लो पतली गली से। बाद में लोग आपस में सिर-फुटौवल करते रहें। उनकी बला से। ऐसे लोग स्वयंभू पुरातत्ववेत्ता होते हैं। ये राह चलते किसी भी पुरानी वस्तु को घूर कर देखने लगते हैं और उसका काल निर्धारित करने में भिड़ जाते हैं। इस चक्कर में बेचारे पिटते भी रहते हैं।

एक दिन एक इतिहासज्ञ एक मोटी महिला को घूर कर देख रहे थे, तो उसके पति ने उनकी पिटाई कर दी और पूछा, "का देख रहा था बे?" [7]

इतिहासज्ञ बोला, "देख रहा था कि ये बिल्डिंग कितनी पुरानी है।" यह सुनकर फिर दनदन पिटाई, "साले, हमार खबसूरत जोरू तुझे बिल्डिंग नज़र आवत है?"

पिटने की पीड़दायक प्रक्रिया से गुजरने के बाद इतिहासज्ञ ने सड़क के उस पार खड़ी एक बिल्डिंग की ओर इशारा करके बोला,

"अरे मेरे बाप, मैं तो उस बिल्डिंग की बात कर रहा हूँ।" तब लोगों ने सॉरी बोल कर उसे छोड़ दिया। उस दिन सड़क के किनारे पड़े एक पत्थर को वह दस हजार साल पुराना बताने लगा।

लोग हँसने लगे, तो वह नाराज़ हो कर बोला, "मुझ पर हँस रहे हो, मुझ पर, जिसे लोग इतिहास-पुरुष कहते हैं? भस्म कर दूंगा तुम सब को।"

लोग घबरा कर आगे बढ़ गए।

एक दिन वह एक घर को गौर से देख रहा था। मकान मालिक घबराया।

दौड़ कर पास आया, "क्यों भाई, क्यों घूर रहे हो इसे?"

इतिहासकार बोला, "इस घर में ही सन् 1860 में स्वामी विवेकानंद रहते थे।। इसे राष्ट्रीय स्मारक बना देना चाहिए।"

पास खड़े एक सज्जन भी कुछ ज्ञान रखते थे। वे भड़क कर बोले, "कुछ भी मत फेंको। विवेकानंद का जन्म 1863 में हुआ था तो वे 1860 में अपने जन्म से तीन साल पहले यहाँ क्या करने आए थे?"

इतिहासकार भी चीखा- "अरे, वे तब आए थे जब अपनी माँ के गर्भ में थे। समझे। उनकी माँ यहां आई थी". उसकी बात सुनकर लोग हँसने लगे तो इतिहासकार खिसिया कर आगे बढ़ गया।

एक दिन शहर के बाहर एक जगह खड़े हो कर इतिहासज्ञ जी लोगों को बता रहे थे, "आप लोग ये जो पत्थर पर पैरों के निशान देख रहे हैं न, वो हनुमान जी के पैरों के निशान हैं।" कुछ लोग फौरन से पेश्तर उस निशान को प्रणाम करने लगे। भीड़ लग गई।

एक ने कहा, "बोलो बजरंग बली की..." तो बाकी लोगों ने कहा, "जय"।

तभी एक आदमी वहां पहुँचा और बोला, "अरे मेरे दद्दा, ये बजरंग बलि के पैर नहीं, एक मूर्ति के पैर हैं। मैं मूर्तिकार हूँ। बहुत दिन से केवल पैर बना कर छोड़ दिया था। अब बाकी काम करूँगा।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

इतना सुनना था कि लोग भड़क गए। इतिहासज्ञ एक बार फिर पिटते-पिटते बचा।

...और उस दिन के बाद से वो इतिहास नहीं, साहित्य में रुचि ले रहा है। उसे किसी ने समझा दिया है कि साहित्य में "फेंकने" की भरपूर गुंजाइश रहती है। जो जितना फेंके, उतना बड़ा साहित्यकार। इतिहासज्ञ अब साहित्य में धूम मचाए हुए है। [8]

कभी कहता है, कविता मर रही है ...

तो कभी कहता है कहानी का अंत हो रहा है।....

यहाँ उसे कोई पीटने वाला नहीं क्योंकि यहाँ एक नहीं, अनेक आत्माएं इसी गोत्र की हैं।

इतिहास के नाम पर

वे लोग बेचारे

उपहास के पात्र

बन जाते है

जो इतिहास के साथ-साथ
फेंकोलजी का भी
पाठ पढ़ाते हैं

विचार – विमर्श

गिरीश पंकज के अनुसार:-

अथ 'एडमिन' कथा

जैसे साहित्य में विफल लेखक आलोचक बन जता है, उसी तरह जीवन में विफल आदमी 'व्हाट्सएप-ग्रुप' बना कर सफल 'एडमिन' हुइ जाता है.अपना तो अनुभव यही बताता है. (अंदर की बात जे है कि मैं भी एक एडमिन हूँ) 'व्हाट्सएप-ग्रुप' के कुछ एडमिनों की शारीरिक संरचना वैसे तो आम मनुष्य के जैसी ही होती है, पर वे अपनी अतिरिक्त क्षमता विकसित करके एक दिन जड़मति से सीधे सुजान में परिवर्तित हो जाते हैं. इसलिए वे आलतू-फालतू ज्ञान के मामले में वे सबसे आगे होते हैं. तभी तो 'एडमिन' जैसे पद को सुशोभित कर रहे होते हैं, वर्ना वे भी ग्रुप के निरीह सदस्यों में से एक होते, जो अक्सर भयंकर बेचारे किस्म के होते हैं. उनका 'व्हाट्सएप-भविष्य' एडमिन की दया पर निर्भर होता हैं। एडमिन उनकी सहमति के बगैर उनको जोड़ता है और जब मूड हुआ, रिमूव (हटा) भी देता है. ऐसा करते हुए उस की आत्मा गदगद रहती है. ऐसे एडमिन खुद को प्रधानमंत्री से कम नहीं समझते । कुछ एडमिन लगातार फतवे जारी करते रहते हैं , "कोई भी घटिया चुटकुले पोस्ट नहीं करेगा".... किसी पर टान्ट नहीं कसेगा"... ये नहीं करेगा.... वो नहीं करेगा". और पता चला कि खुद फुहड़ चुटकुला दे रहे हैं। लेकिन उसे सब छूट है क्योंकि 'एडमिन' है भाई. कुछ खाली बैठे लोग ग्रुप बनाने में ही लगे रहते हैं. गोया उनके पास और कउनो धंधा ही नहीं है. तुकबन्दी करने वाले कवि टाइप का जीव होगा तो ग्रुप बना लेगा, 'कविताकला'. और लोहे का व्यापारी है, तो उसके ग्रुप का नाम होगा, 'हम लौह पुरुष'. पिछले दिनों एक कबाड़ी ने भी ग्रुप बनाया और उसका नाम रख दिया, 'कबाड़खाना'. जीवन भर ब्लैकमेलिंग करने वाले एक सज्जन ने ही अपने ग्रुप का नाम रख दिया , 'हम क्रांतिकारी'. इसमें उन सबको को शामिल किया जो 'सूचना के अधिकार' का अपने पक्ष में 'आर्थिक उपयोग' करे की कला में पारंगत थे. पाकिटमारों ग्रुप बनाया और उसका नाम आम रखा, 'सफाईकर्मी' .[9]

कल तक जिन्हें कोई मोहल्ले में भी न पूछता था, वे आज दो-तीन ग्रुपों के स्वामी हैं.एक ने तो बाकायदा विजिटिंग कार्ड छपवा लिया है, जिसमे लिखा रहता है, 'एडमिन- कबाड़खाना', 'एडमिन -कविताकला', 'एडमिन फलाना-फलाना'. जो भी मिलता है उससे आग्रह करते हैं 'हमारे ग्रुप से जुड़ जाएँ और क्रांति करें।' एक एडमिन तो कमाल का था. उसकी अपने सगे भाई से नहीं पटती थी, मगर उसके ग्रुप का नाम था, 'भाईचारा'. अपने ग्रुप में वो प्रेम का, भाईचारे का, दया-ममता का संदेश देता था. और सगे भाई के खिलाफ मुकदमे में भिड़ा रहता था. तो एडमिन अनन्त, एडमिन-कथा अनन्ता है. कुछ एडमिन घर पर भी अकड़ कर चलते हैं और बाहर भी. इधर-उधर कुछ इस अंदाज़ से देखते हैं कि लोग समझ जाएँ कि बन्दे में कुछ दमख़म है. एडमिन को लगता है कि वो जन-गण -मन का भाग्यविधता है और उसके ग्रुप के सदस्य जो हैं सो केवल मोहरे हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

उस दिन एक अस्त-व्यस्त पर अपने में मस्त एडमिन पर उसकी एक अदद धर्मपत्नी चीख रही थी, "ये क्या, हर वक्त मोबाइल में लगे रहते हो, घर के काम तो करते नहीं।" पति कुछ देर के लिए सहम गया और बोला, "रुको अभी, दो लोग को जोड़ना है और पांच लोगों को हटाना है." पत्नी चीखी, " तुम्हारे जोड़-घटाने की प्रतिभा यही दिखती है. देखो, अपना बिट्टू फिर फेल हो गया है गणित में." एडमिन पत्नी की मूढ़ता पर मन-ही-मन दुखी हुआ और गुस्से में व्हाट्सएप ग्रुप से दस लोगों को हटा दिया .ये वे लोग थे, जो न कोई चुटकुले भेजते थे, न शेरोशाइरी, न किसी महापुरुष का कोई अनमोल वचन. बस व्हाट्सएप के जनपद में उपेक्षित और निष्क्रिय नागरिक की तरह पड़े रहते थे। 'एडमिन' ऐसे लोगो को हटा कर बड़ा खुश होता है .उसे लगता है, जैसे देश की सीमा से किसी घुसपैठिए को भगा दिया हो. एडमिन अपना महत्व बताने के लिए कुछ-न-कुछ निर्देश भी पेलते रहता है, जिसे हर सदस्य झेलते रहता है. एक बार एक एडमिन ने किसी सदस्य को हटा दिया तो सदस्य ने फोन कर उसकी क्लास ली, "क्यों भाई, चिरकुट जी, मुझे क्यों हटा दिया? जोड़ा ही क्यों था, और किससे पूछ कर? और अब हटा क्यों दिया ? तुम हो कौन भाई? कहाँ से टपके हो?" इतना सुनना था कि एडमिन पिन-पिन करने लगा -" हें... .हें, भूल से रिमूव हो गया। फिर जोड़ लेता हूँ। " सदस्य कहता है, " भूल कर भी ऐसा मत करना। न जाने कितने जन्मों के बाद मनुष्य योनि नसीब हुई है और तुम उसका सुख लेने की बजाय अपने ग्रुप में जोड़ कर आलतू-फालतू फूहड़ चुटकुले और राजनीतिक आग्रह-दुराग्रह झेलवाते रहते हो. मुझे मुक्त रखो. तुम्हें दूर से ही नमन। " फटकार सुनकर एडमिन टेंशना जाता है, पर बहुत जल्दी सामान्य हो कर फिर 'किसे हटाऊँ, किसे जोड़ूँ' में भिड़ जाता है. पत्नी सर पीटती है और निठल्लेराम उर्फ़ एडमिन-पतिदेव को कोसते हुए किराने का सामान लेने खुद निकल जाती है.[10]

अर्थी पर लाल बत्ती...

उनको लालबत्ती से बड़ा प्रेम था.

कार में बैठे हैं तो सामने लाल बत्ती, बैलगाड़ी पर भी सवार होते तो सामने लालबत्ती. कभी-कभार नाटक-नौटंकी करने के लिए रिक्शे पर चलते तो भी तो हुड पर लालबत्ती. घर पर रहते तो बाहर लालबत्ती घूमती रहती.

लोग उन्हें 'लालबत्ती वाले भैयाजी' कहने लगे.

एक दिन वे मर गए. तब भी उनकी अंतिम इच्छा पूरी हुई.

अर्थी के सामने लालबत्ती लगाकर शवयात्रा निकली.

लोगों ने नारे भी लगाए- "राम नाम सत्य है.....भैया जी अमर रहे ...

राम नाम सत्य है.....भैया जी अमर रहे."

नारेबाज़ी में नंबर वन.....

विश्व के तमाम देशो के बीच अगर नारेबाजी की प्रतियोगिता हो तो अपना देश हमेशा पहले नंबर पर रहेगा।

एक-से-एक नारे । कुछ लोग तो जीवन भर नारे की ही खाते हैं. ये और बात है कि कुछ अधिक खा लेते हैं तो अपच होने लगती है. यानी काली कमाई जमा होती जाती है. तो का करें। मजबूरी में विदेश जाकर काला धन जमा करके लौटते है और फिर नारा लगाते हैं - भारत माता की जय. हर सरकार नए नारे के साथ प्रकट होती हैं। इसे नारा नहीं झुनझुना भी कह सकते हैं. और कमाल की है जनता। हर बार झुनझुने से प्रभावित हो कर अपने दुबारा लुटने का बंदोबस्त कर लेती है. किसी ज्ञानी ने कहा है कि इसी छलावे का नाम है लोकतंत्र।

जल संकट का दौर था, तो सरकार चिल्लाई "जल बचाओ. जल है तो कल है।"

जनता ने कहा, "जल हो तो बचाएँगेन न ।"

मंत्री ने चौंकते हुई कहा -"अरे, जल नहीं है? अभी तो पीए ने गूगल में सर्च कर बताया कि जल की कउनो कमी नहीं है. यकीन नहीं होता तो गूगल बाबा की शरण में जाओ."

जनता बोली- "गूगल सर्च कर सकते तो पानी का भी बंदोबस्त कर लेते।"

पीए ने मंत्री के कान में कहा- "अनपढ़ जनता है। बेचारी, इंटरनेट का कनेक्शन नहीं लगा पा रही।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

पीए की बात सुनकर मंत्री की आँखों में आँसू आ गए और बड़बड़ाए -' हाय-हाय मेरी जनता'। फिर बोतलबंद पानी को गटकते हुए बोले- "आप लोग बोलिए माता की जय। हमारी माता जल संकट हरेगी।"

जनता ने नारा लगाया। मंत्री ने पूछा- "कैसा फील हो रहा है?"

जनता बोली- "लग रहा है, हम पानी से नहा रहे हैं। आपका आभार । आपने हमें जल संकट से उबारा।" कुछ दिनों के बाद चुनाव होने थे। मंत्री को सत्ता का खून लग चुका था। फिर चुनाव लडऩे मैदान में उतर चुके थे।

वे जनता के पास पहुँचे और बोले- "मुझे ही वोट देना। भारतमाता की जय." [11]

जनता ने कहा, " बिल्कुल आपको ही देंगे। भारत माता की जय।"

चुनाव के नतीजे सामने आए, तो मंत्री और उनकी पूरी सरकार 'टें' बोल चुकी थी। पराजित मंत्री का पीए गधे के सर से सींग की तरह गायब हो चुका था।

नई सरकार सत्ता पर विराजमान हो चुकी थी। उसने नया नारा दिया था- 'देश मेरा, विकास मेरा। सबको पानी, सबको काम, थोड़ी मेहनत, ज्यादा दाम'।

जनता ने सोचा- नारा तो अच्छा है। अब शायद अच्छे दिन आएँगे । लेकिन न विकास हुआ, न किसी को काम मिला । दाम तो बहुत दूर की बात।

एक ने कहा- "क्या हम फिर ठगे गए?"

दूसरा हँस पड़ा।

पहले ने पूछा- "क्यों हँस रहे हो?"

दूसरे ने कहा- "अपने आप पर हँसने से टेंशन कम हो जाता है। सरकार पर हँसना अपनी मूर्खता को प्रकटीकरण ही है। इसलिए अब चिंता मत करो। नारों के साथ हो जाओ और भारत माता की जयबोल कर संतोष करो।"

पहले ने पूछा- "और ये जो जल संकट है, उसका क्या?"

मित्र ने कहा- " ये किरकेट मैच काहे होते हैं भाई? इनको देखो और मनोरंजन करो न। और अगर प्यास लगती भी है तो बाजार में बिकने वाला फलाना-फलाना शीतयपेय पी कर कूल-कूल बने रहो।" [8]

परिणाम

गिरीश पंकज के अनुसार:-

' सूखे ' का परम ' सुख '

अपने यहाँ सूखा पड़े तो कुछ लोग बड़े सुखी टाइप के हो जाते हैं. बाढ़ आ जाए या महामारी तो वे गदगद हो कर भगवान के आभारी हो जाते हैं. ये सारे अवसर किसी उत्सव से भी कम नहीं होते। मंत्री से लेकर संत्री और अधिकारी से लेकर कर्मचारी तक धन्य हो जाते हैं. कुछ सरकारी घरों में औरते यही मनाती है कि प्रभो, इस बार भी अच्छा-खासा 'सूखा' पड़े ताकि घर एक बार फिर कुछ 'गीला' हो सके. 'सूखा-उत्सव' का 'सुख' ही अलग है.

अफसरजी की इकलौती बीवी अपनी सहेली के साथ सूखे दिनों को याद कर रही है-"जब पिछली बार सूखा पड़ा था, तो बड़ा मज़ा आया था. 'ये' सूखा-सर्वे करने गए थे, इनके साथ हम भी चले गए. बड़े पत्नी-भक्त है. सरकारी दौरे में कभी-कभी साथ ले जाते हैं. हम रेस्ट हाउस में रुके. क्या खातिरदारी हुई थी वहां. पनीर की सब्जी तो बड़ी स्वादिस्ट बनी थी. खाना बड़ा लज़ीज़ था, सो अधिक खा लिया था. रसगुल्ले तो न जाने कितने पीस गटके होंगे. उसी कारण कुछ दिन पेट खराब रहा, इसलिए वह सूखा भुलाए नहीं भूलता। सूखा न पड़ता, तो घर में होम थिएटर वाला टीवी भी न आता. जब कोई बड़ा प्राकृतिक संकट आता है, हमारे घर में कोई-न-कोई बड़ा आइटम आ जाता है . भगवान का लाख-लाख शुक्र है..तेरी मेहर हम पर बनी हुई है.." [9]

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

सहेली की बात सुनकर दूसरी बोली- "सचमुच, सूखा में परमसुख छिपा है.मैं तो बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करती हूँ, पर क्या करें, कभी-कभी सूखा पड़ता ही नहीं, लेकिनकोई बात नहीं, तब बाढ़ आ जाती है न. उसके लिए भी राहत-फंड बहुत रहता है. इसी बहानेअपने घर में भी कुछ-ं-न- कुछ राहत कार्य हो जता है . 'मतबल' ये कि सूखा आए चाहे बाढ़, हम लोग तर रहते हैं. अगले जन्म में हमें ऐसा ही पति दे जो सरकरी नौकरी में हो पर मालदार पोस्ट में हो. ये जीवन तो एक दिन नष्ट हो जाएगा इसलिए क्यों न ऐश करके मरें."

पहली ने कहा - "पर बड़ा संभल कर करना पड़ता है न. आजकल जलनखोर बढ़ गए हैं। शिकायत कर देते हैं. छापा पड़ जाता है। बड़ी मुसीबत हो जाती है.हालांकि कुछ-न-कुछ दे कर मामला मैनेज भी हो जाता है।"

दूसरी ने कहा - ठीक कहती हो, कुछ पाने के लिए कुछ खोना भी पड़ता है. इज़्ज़त को क्या चाटेंगे? अरे, नंबर दो का काम करने से कुछ बदनामी भी होती है, तो सह लेना चाहिए। लेकिन फायदा कितना है, ये तो देखो। वैसे आजकल छापे-वापे से बदनामी नहीं होती, उलटे शान बढ़ जाती है. बच्चे चहकते हुए पड़ोस के बच्चों को बताते है कि हमारे घर पर छापा पड़ा, तेरे घर नहीं पड़ा, लगता है तेरे डैडी कंगाल हैं।"

पहली बोली- "इस बार सूखा-उत्सव के बाद हम तो विदेश भ्रमण पर निकल जाएंगे। तेरा क्या प्लान है ?" दूसरी बोली- " हम लोग पंचतारा होटल में मैरिज एनवर्सरी को सेलिब्रेट करेंगे। मालेमुफ्त को उड़ाते रहना चाहिए।"

दोनों सहेलियां जोर से हंसती हैं. वे एक-दूसरे से सहमत थी और सूखे के कारण उनके जीवन में जो 'खुशहाली' बिखरी थी, उसका सुख लेते हुए वे किटी पार्टी के सुख को और अधिक बढ़ा रही थी.

निष्कर्ष

गिरीश पंकज का मतलब एक बहुआयामी रचनाकार है । वे एक साथ व्यंग्यकार, उपन्यासकार, ग़ज़लकार एवं प्रख्यात पत्रकार हैं । सद्भावना दर्पण नामक वैश्विक स्तर पर चर्चित अनुवाद पत्रिका के संपादक हैं । देश एवं विदेश में सम्मानित । युवाओं के प्रेरणास्त्रोत । सद्भावना, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव के लिए संपूर्ण राज्य में एक विशिष्ट स्थान रखने वाले गिरीश पंकज को पढ़ना अपने आप में एक विशिष्ट अनुभव से गुजरना है ।

इस अवसर पर प्रस्तुत है उनका एक व्यंग्य -

!! व्यंग्य:हम तो मूरख जनम के !!

हम जैसे लोग अक्सर उल्लू बना दिए जाते है, कई बार तो यही लगता है, कि हम इस धरा पर केवल मूर्ख बनने के लिए ही अवतरित हुए हैं. जिसे देखो, टोपी पहना देता है, बोले तो.... मामू बना देता है. इसीलिये तो पहली अप्रैल क्या आती है और हम जैसे मूर्खों की बन आती है। निकल पड़ती है. भाई लोग बधाइयाँ देते हैं और हम खुश हो लेते हैं यह सोचकर कि अपने हिस्से भी एक अदद दिन है, जो 'मनाया' जाता है। हम तो अपने आपको मूरख ही मानते हैं। हे पाठक, बेशक आप नहीं होंगे, ऐसा सोचना मेरा अपना फर्ज़ है। कर्त्तव्य है. लेकिन का करें....हम तो हूँ न.[10]

अब मैं मूर्ख क्यों हूँ, इसका खुलासा किस तरह करूँ ? एक तरीका तो यही हो सकता है कि आप इन पंक्तियों को पढ़ कर ही समझ सकते हैं कि ये शख्स मूर्खता भरी बातें कर रहा है तो जाहिर ही है कि मूर्ख होगा. आज तो हर कोई अपने आपको बुद्धिमान साबित करने की 'मूर्खता' में भिड़ा हुआ है और ये पट्ठा खुद को मूरख बताने में उतारू है, तो इससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा भला।

एक दफे की बात है। वन्स अपॉन ए टाइम...चुनाव होने वाले थे और रंग-बिरंगे, चित· बरे, नेता इधर-उधर 'वोटर' रूपी शिकार की तलाश में भटक रहे थे, कि हमसे मुठभेड़ हो गई। एक नेता ने अपने सिर की टोपी उतारी और मेरे धूल-धूसरित पैरों पर धर दी। फिर रोनी सूरत बना कर कहने लगा- '' हे नर पुंगव, मनुष्यों में श्रेष्ठ, आज जो तू मुझे दर्शन देने की कृपा कर रहा है, उससे मेरा मन हर्ष से भरा जा रहा है। मैं तुम्हारे दर्शनार्थ ही भटक रहा था, प्रभो।' '

' 'लेकिन मेरी ऐसी क्या ज़रूरत आन पड़ी आपको ?' नेता के इस असाधारण मक्खनयुक्त वचन सुनकर मेरा मूरख मन गदगद हो गया था। मैंने कहा, 'कृपा करके अपनी इन चिकनी-चुपड़ी बातों का प्रयोजन तो बताइए, तात ।' '

' 'प्रयोजन स्पष्ट है। सामने चुनाव है, इसीलिए तो हमको कष्ट है।' नेताजी बोले, 'पिछली बार हम हड़बड़ी में थे। आपकी तरफ निहारने ·का समय ही नहीं मिल पाया था, लेकिन अब सड़क पर हैं, तो आप और आपका पूरा खानदान हमें याद आ रहा है। आपके घर में कुल छह वोट हैं न ?''

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

' 'हाँ। क्यों ?''

' 'वो सबके सब मुझे चाहिए, चुनाव जीतने के लिए।' ' नेताजी ने दोबारा अपने गंदे हाथों को मेरे पैरों की तरफ फैलाया।

' 'लेकिन इससे कोई फायदा नहीं।' मैंने अपना मतदातावाला गुस्सा दिखाते हुए कहा 'आप लोग वादे करके राजधानी चले जाते हैं और फिर 'वाट' लगा देते है यानी कि अपने ही वादों की निर्ममतापूर्वक हत्या कर देते हैं। वादे तो पूरे करते नहीं और आ जाते हैं, हाथ पसारने, शर्म आनी चाहिए।' '

आश्चर्य...ससुरा नेता हँस पड़ा। नेता और शर्म ?

हँसने के बाद नेता बोला, "आप मजाक कर रहे हैं। आपसे वादा करता हूँ कि पिछले वादों को इस बार ज़रूर पूरा करूंगा...करके रहूँगा। हम सरकार बना रहे हैं। पिछली बार हमारी सरकार नहीं बनी थी न, इसलिए कुछ करने-कुराने का मौका ही नहीं मिला। इस बार देख लेना रामभरोसे जी, तुम्हारे सारे सपने पूरे हो जाएंगे।फिर से मेरा वादा "

' 'सच ?' मैं सपने पूरे होने के वादे मात्र से गद्गदायमान हो गया, 'अगर ऐसी बात है तो फिर हमारे घर के सारे वोट आपके भिक्षा-पात्र में ही समझो।' '

हमारी 'तथास्तु' वाली मुद्रा से नेता का छुहारा जैसा चेहरा तन कर -किसमिस नहीं.... नहीं अंगूर की तरह दीखने लगा।

नेता धन्यवाद बोल कर चला गया तो फिर दोबारा अपने इलाके में नज़र ही नहीं आया। दिन, महीने, साल बीतते गए। उसे नहीं आना था, वह नहीं आया।

एक दिन जब मैं आईने के सामने खड़ा होकर अपने चेहरे पर खिंची हुई दुख-दर्द की रेखाएं गिन रहा था, तभी मेरे चेहरे ने ताना मारते हुए कहा, "आखिर बन गए न बच्चू अप्रैल फूल यानी फिर से मूर्ख? इन नेताओं के आंसुओं और वादों के चक्कर में पड़ कर पूरा देश घनचक्कर बन कर बर्बाद हो रहा है, तो तुम किस खेत की मूली हो, ऐं ?"

मैंने फिल्मों के हास्य कलाकार की स्टाईल में सिर लटकाते हुए कहा, "तुम ठीक कहते हो मित्र, पर क्या करें, हमें बनना था, हम बनते रहे और हम बन गए मूरख।" फिर खुद 'टुईं...टुईं...टुईं' की म्यूजिक निकालते हुए ऐसे 'गिरे' कि 'लग' गई।

बिस्तर पर गिरे और नींद लग गई और सपने देखने लगे।[11]

सपने में वही नेता दीख पड़ा। अपने महल के तहखाने में घुसकर वह 'नोट' गिन रहा था। मैंने उसे लट्ठ लेकर दौड़ाया तो 'दुम' दबा कर भाग गया। उसके साथ ही उसकी सारी संपत्ति भी जाने किधर लापता हो गई। नींद टूटी, सो अलग। मैं सोचने लगा, हम मूर्खों की किस्मत भी कितनी बुरी है। एक 'ठन' सपना भी पूरी तरह से नहीं देख पाते।

हम तो रोज मूर्ख बनते हैं। जैसे, अपने देश के दूकानदार रोज हमको मूर्ख बनाते हैं और हम बन जाते हैं।

उस दिन दूकानदार से मैंने पूछा - 'क्यों भाई साहब, इस चीज की कीमत कल तक पचीस रुपए थी, आज पैंतीस रुपए कैसे हो गई ?' तो उसने बत्तीसी दिखते हुए कहा, 'अभी आपने टीवी पर खबर नहीं सुनी? इसका दाम बढ़ गया है।'

'लेकिन सुबह वाली न्यूज़ में तो ऐसा कुछ भी नहीं था।' मैंने कहा।

'एक बजे वाली में था।' दूकानदार का 'तुरंतो' जवाब।

'लेकिन एक बजे वाली न्यूज़ भी मैं सुन चुका हूँ। उसमें भी ऐसी कोई घोषणा नहीं हुई थी।' मैंने उखड़ते हुए कहा।

'तो फिर शायद दो बजे वाली न्यूज़ में हुई थी घोषणा।' बेशर्म जवाब मिला

अब, हम खामोश। क्या कहें। हुई होगी घोषणा। ले भइया पैसे। अब ये दूकानदार भी गजब में शर्म-मुक्त होते हैं। रेडियो-टीवी की घोषणा होते साथ ही कीमत बढ़ा देंगे, लेकिन घटाने की घोषणा होगी, तो चिकने घड़े बन जाएंगे। पूछने पर कहते हैं, 'हमारे पर इस तरह का कोई कागज नहीं आया।' गजब की हिम्मत होती है ऐसे लोगों में। ये लोग 'सुप्रेम' मूर्ख बना देते हैं और हम 'सुप्रेम' बन भी जाते हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 12, December 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1012111 |

तो आदरणीय, हमारी नियति है मूर्ख बनना। घर में बीवी, बच्चे मूर्ख बना कर पैसे ऐंठ लेते हैं। बाहर दूकानदार, भिखारी और उधारखाऊ यार-दोस्त। हम कदम-·कदम पर ठगे जाते हैं। ठगे यानी कि मूर्ख बनाए जाने के अनेक किस्से हैं। हरिकथा की तरह अनंत। अपनी मूर्खता को ज्यादा उजागर करने से बड़ी मूर्खता और क्या होगी ? इसलिए भलमनसाहत यही है कि चुप रहा जाए और 'मूर्ख दिवस' में यह सोच कर खुश रहने की आदत डाली जाए कि साल का एक दिन हमारे नाम कर दिया गया है। लोगबाग आते हैं और मूर्ख दिवस की हार्दिक बधाई दे कर चले जाते हैं।

नेताजी का भी मोबाइल आया था राजधानी से। उनकी ·कर्कश आवाज गूँजी, ''क्या रामभरोसे जी बोल रहे हैं ?''[10,11]

हाँ भाई, हाँ, हम राम जी के भरोसे रहने वाले ही बोल रहे है,. आप कौन...?

''पहचान कौन..? ''

आवाज फटी-फटी -सी, कुछ - कुछ शातिराना अंदाज़ भी. कौन हो सकता है...? हाँ, और कौन होगा. अपने पल्टू भैया होंगे यानी नेताजी. वे नेताजी ही थे. मैंने कहा, " हाँ-हाँ, पहचान गया, फरमाइए, कैसे याद किया? चुनाव तो अभी बहुत दूर है...? "

वे फटी हुई हंसी के साथ बोले- ''आपको मूर्ख दिवस पर लख-लख बधाइयाँ।' '

फिर उसके बाद तो बधाइयाँ।' देने वालों के फोन पर फोन आने लगे.

हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में बहुचर्चित अट्टहास सम्मान(लखनऊ) प्राप्त कर चुके साहित्य अकादमी", नई दिल्ली के सदस्य चर्चित व्यंग्यकार गिरीश पंकज के आठ व्यंग्य संग्रह, तीन व्यंग्य उपन्यास समेत अनेक विधाओं में बत्तीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. इनके व्यंग्य साहित्य पर अब तक सात लोग लघु शोध-कार्य कर चुके हैं. अभी हाल ही में पंजाब की दीपिका ने एम्- फिल. की उपाधि के लिए श्री पंकज के व्यंग्य उपन्यास ''पालीवुड की अप्सरा'' पर शोध कार्य पूर्ण किया. कर्नाटक के नागराज पी-एच. डी. उपाधि के लिए श्री पंकज के समग्र व्यक्तित्व-कृतित्व पर शोध कार्य कर रहे है.[11]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "गिरीश पंकज से लालित्य ललित की बातचीत गद्य कोश में". मूल से 28 अगस्त 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 अगस्त 2013.
2. https://books.google.co.in/books/about/MR_Atmanirbhar.html?id=AoqwzQEACAAJ&redir_esc=y
3. https://www.google.com/search?q=GIRISH+PANKAJ&rlz=1C1CHBF_enIN91
4. https://www.exoticindiaart.com/book-author/girish%20pankaj/
5. https://www.pinterest.com/pin/566749934351304832/
6. https://rubarunews.com/
7. https://www.wikiwand.com/hi/
8. https://www.hindlish.in/sentence-in-hindi
9. https://sablog.in/author/girishpankaj1/
10. https://currentnews.org.in/from-girish-pankajs-pen-it-is-difficult-to-forget-prof-jayanarayan-pandey-special-death-anniversary/
11. https://www.raigarhtopnews.com/roshan-lal-agrawal-ke-nidhan-par-girish-pankaj-ne-jataya-shok/

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor:
7.569

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com